International Journal of Applied Research 2015; 1(5): 143-144

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(5): 143-144
www.allresearchjournal.com
Received: 07-03-2015
Accepted: 26-03-2015

Reema Dewangan
Asstt. Professor (Education)
ST.Thomas College Bhilai (C.G.)

Correspondence:
Reema Dewangan
Asstt. Professor (Education)
ST.Thomas College Bhilai (C.G.)

शिक्षकों की भावनात्मक एवं बौद्धिक कठोरता पर एक अध्ययन

Reema Dewangan

Abstract
प्रस्तुत शोध छत्तीसगढ़ के शिक्षकों की कठोरता के विभिन्न पहलुओं जैसे भावनात्मक कठोरता, बौद्धिक कठोरता आदि पर एक अध्ययन करना है। शोध का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के शिक्षकों की कठोरता के मध्य अन्तर अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में छत्तीसगढ राज्य के दुर्ग जिले के 80 शिक्षकों को यादृच्छिक विधि द्वारा लिया गया है। शिक्षकों के कठोरता का मापन करने के लिये डॉ. एन.के. चड्ढा द्वारा निर्मित कठोरता मापनी का उपयोग किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण हेतु आंकड़ों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर "टी मूल्य" द्वारा सार्थकता स्तर ज्ञात किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष यह बताते हैं कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की कठोरता एवं भावनात्मक कठोरता के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया तथा शिक्षकों की बौद्धिक कठोरता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया ।

Key word: बौद्धिक कठोरता, भावनात्मक कठोरता, समायोजन

प्रस्तावना
सभ्यता के समूचे विकास में शिक्षक ही है जिसने बौद्धिक परम्पराओं और तकनीकी कौशल को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया है और हमारी सभ्यता, संस्कृति की परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखा। शिल्पकार की भांति समय की मांग के अनुरूप नई पीढ़ी तैयार करता है। नई पीढ़ी को अपनी प्राचीन सभ्यता एवं सांस्कृतिक धरोहरों तथा आधुनिक युग के बीच सामंजस्य करना सिखाता है।
शिक्षा की समूची प्रक्रिया पारस्पारिक संवादातात्मक व क्रियात्मक है। इस प्रक्रिया का सुत्रधार होता है शिक्षक, जो ज्ञान और छात्र के बीच की कड़ी है। शिक्षा प्रक्रिया को जीवंत रखने का दारोमदार योग्य शिक्षक पर ही होता है। हालाकि हमारे शैक्षणिक कार्यक्रम में प्रमुख आधार विद्यार्थी है, अध्यापक नहीं फिर भी उनकी महत्ता कम नहीं आंकी जा सकती।
समाज के आर्थिक, राजनीतिक आध्यात्मिक व मानसिक विकास के लिये शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षक की सकारात्मक अभिवृत्ति ही उसे सफल एवं सम्मानित शिक्षक बनाती है। शिक्षक में वातावरण के अनुसार स्वयं को समायोजित या परिवर्तित करने की क्षमता होनी चाहिये। उनके स्वभाव में कठोरता का गुण निम्न व समायोजन की क्षमता अधिक होनी चाहिये तभी वे आज के बदलते परिवेश के आधुनिक युग में होने वाले शैक्षिक परिवर्तनों व प्रक्रियाओं को ग्रहण कर छात्रों को उनका लाभ दे सकेंगे।
कठोरता, शिक्षक को प्रभावित करती है जिससे शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया प्रभावित होती है। यदि शिक्षक में कठोरता है तो परिवर्तनों का प्रतिरोध करेगा। यह प्रतिरोध पुराने समय के रीति–रिवाजों से, संस्कृति से, व्यवहार से स्वयं की भावनाओ से, सामाजिक परिवर्तनों से, बौद्धिक क्षमता से एवं दृष्टिकोण (सकारात्मक व नकारात्मक) आदि से संबंधित हो सकती है। शिक्षक की यह प्रवृत्ति छात्रों को प्रभावित करती है क्योंकि शिक्षक के व्यक्तित्व की छाप छात्रों पर गहरा असर छोड़ती है, जिससे शिक्षा भी प्रभावित होती है अतः शोधार्थी द्वारा शिक्षकों की कठोरता के विभिन्न पहलुओं पर एक अध्ययन किया गया।

समस्या का उद्धरण –
"शिक्षकों की भावनात्मक एवं बौद्धिक कठोरता पर एक अध्ययन"
उद्देश्य :–
1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के शिक्षकों की कठोरता के मध्य अन्तर ज्ञात करना।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के शिक्षकों की बौद्धिक कठोरता के मध्य अन्तर ज्ञात करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के शिक्षकों की भावनात्मक कठोरता के मध्य अन्तर ज्ञात करना।

परिकल्पना :–
H1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के शिक्षकों की कठोरता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।
H2 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के शिक्षकों की बौद्धिक कठोरता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।
H3 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के शिक्षकों की भावनात्मक कठोरता मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

शोध विधि :–

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में छत्तीसगढ राज्य के दुर्ग जिले के शहरी क्षेत्र के 6 शासकीय विद्यालय एवं ग्रामीण क्षेत्र के 7 शासकीय विद्यालय का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है जिनमें 80 (40 शिक्षक एवं 40 शिक्षिकाओं) का न्यादर्श हेतु चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के अंतर्गत उपयोग में लायी गई शिक्षकों की कठोरता का अध्ययन करने के लिये डॉ. एन.के. चड्ढा द्वारा निर्मित कठोरता मापनी का उपयोग किया गया है।

प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या :–

परिकल्पना की सत्यता की जांच के लिये शोधकर्ता ने शहरी एवं ग्रमीण एवं के शासकीय विद्यालयों के शिक्षको पर परीक्षण किया गया तथा कठोरता मापनी की सहायता से प्राप्त आंकड़ों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन, ज्ञात कर "टी मूल्य" द्वारा सार्थकता स्तर ज्ञात किया गया।

H1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षको की कठोरता के मध्य सार्थक अन्तर पाया नहीं जायेगा।

तालिका क्रमांक 1: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के शिक्षक की कठोरता का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	"टी मूल्य"
1.	शहरी क्षेत्र के शिक्षक	40	40	5.84	8.39
2.	ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक	40	42.34	4.83	
df=78		P < 0.05			सार्थक अंतर है

सारणी क्रमांक 1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की कठोरता का मध्यमान 40 तथा प्रमाणिक विचलन 5.84 प्राप्त हुआ और ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की कठोरता का मध्यमान 42.34 एवं प्रमाणिक विचलन 4.84 प्राप्त हुआ। प्रदत्तों की स्वतंत्रता अंश 78 है। इनके मध्य "टी" मूल्य 8.39 प्राप्त हुआ जो 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर दर्शाता है।
यह परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के शिक्षक की कठोरता के मध्य सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः प्रस्तावित परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

H2 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के शिक्षकों की बौद्धिक कठोरता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक 2: शिक्षकों की बौद्धिक कठोरता का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	"टी मूल्य"
1.	शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की बौद्धिक कठोरता	40	6.9	2.03	1.03
2.	ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की बौद्धिक कठोरता	40	6.8	1.74	
df=78		P > 0.05			सार्थक अंतर नहीं है

सारणी क्रमांक 2 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के शिक्षको की बौद्धिक कठोरता का मध्यमान 6.9 तथा प्रमाणिक विचलन 2.03 प्राप्त हुआ और ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की बौद्धिक कठोरता का मध्यमान 6.8 एवं प्रमाणिक विचलन 1.74 प्राप्त हुआ। प्रदत्तों की स्वतंत्रता अंश 78 है। इनके मध्य "टी" मूल्य 1.03 प्राप्त हुआ जो 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं दर्शाता है।
यह परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के शिक्षक की बौद्धिक कठोरता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। अतः प्रस्तावित परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H3 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के शिक्षकों की भावनात्मक कठोरता मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक 3: शिक्षकों की भावनात्मक कठोरता का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	"टी मूल्य"
1.	शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की भावनात्मक कठोरता	40	6.5	1.4	7.89
2.	ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की भावनात्मक कठोरता	40	7.1	1.5	
df=78		P < 0.05			सार्थक अंतर है

सारणी क्रमांक 3 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के शिक्षको की भावनात्मक कठोरता का मध्यमान 6.5 तथा प्रमाणिक विचलन 1.4 प्राप्त हुआ और ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की बौद्धिक कठोरता का मध्यमान 7.1 एवं प्रमाणिक विचलन 1.5 प्राप्त हुआ। प्रदत्तों की स्वतंत्रता अंश 78 है। इनके मध्य "टी" मूल्य 7.89 प्राप्त हुआ जो 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर दर्शाता है।
यह परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के शिक्षक की भावनात्मक कठोरता के मध्य सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः प्रस्तावित परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष :–

शिक्षक शिक्षा व्यवसाय की धुरी है। शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति में शिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। शिक्षक ही वह शक्ति है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली संततियों पर अपना प्रभाव डालती है। अतः एक शिक्षक में सकारात्मक दृष्टिकोण आवश्यक है।
ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की कठोरता के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया जिसका कारण मुख्यतः शालेय वातावरण है, जो कि क्षेत्र से प्रभावित है। व्यक्तिगत रूप से विश्लेषण करने पर बौद्धिक, सामाजिक, एवं बोध करने की क्षमता की कठोरता में संभवत व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व से यह कारक अधिक संबंधित है न कि वातावरण से। व्यक्ति की भावनाएं, आदतें, व्यवहार, संस्कृति, रीति –रिवाज, सृजनात्मकता जैसी क्षमता वातावरण से प्रभावित होती है जिसके कारण इन कठोरता के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया।
ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कठोरता के मध्य सार्थक अंतर नहीं है जबकि शहरी क्षेत्र में लिंग का प्रभाव कठोरता पर पाया गया इसका कारण शहरी क्षेत्र की सुविधाएं सामाजिक वातावरण तथा जागरूकता हो सकता है जिसकी वजह से महिलाएं अपने आपको सामायोजित कर लेती है एवं कुछ गुण जैसे स्नेह, सहानुभूति, धैर्य आदि गुणों का समावेश महिलाओं को प्राकृतिक रूप से किसी भी क्षेत्र में अधिक समायोजन बनाते है।

संदर्भित ग्रंथ सूची :–

1. कपिल, एच.के., अनुसंधान विधियाँ (व्यवहार विज्ञानों में), एच.पी. भार्गव बुक हाउस, 1984
2. सरीन, शशिकला, एवं सरीन, अंजनी , शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, (सांख्यिकी सहित), विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2
3. गैरेट, हेनरी ई , शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी सहित,लुधियाना कल्याणी पब्लिकशर्स,1987.
4. पाठक, पी.डी., शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा,2000
5. शर्मा बी.एन., शिक्षा मनोविज्ञान साहित्य प्रकाशन, आपका बाजार हा. रोड आगरा–3
6. मनदेवन, एटीट्यूड ऑफ टीचर्स टुवर्ड्स एजूकेशलन इनोवेसन एडूट्रेक, जनवरी 2006, वाल्यूम 5, नं. 5, पृ.सं. 26.